डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 जून 2012 : मूल्य - पाँच रुपये

मासिक पत्रिका

अजायब ❁ बानी

वर्ष : दसवां | अंक : दूसरा | जून-2012

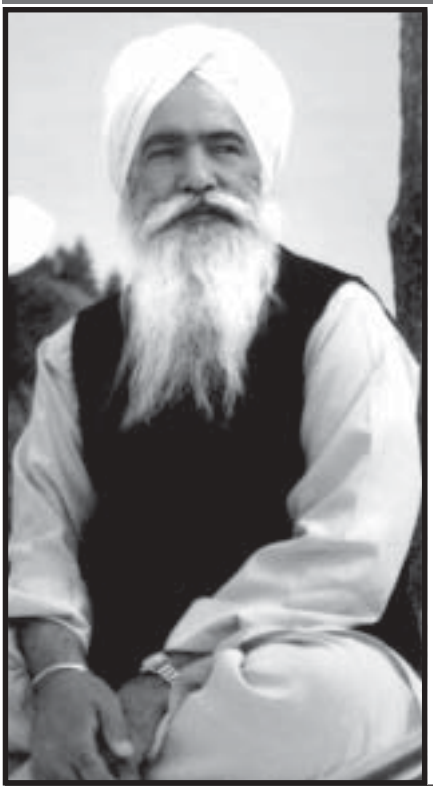

ऐहे ते देश पराया 4
भ्रम की नगरी 5
गुरु कभी दूर नहीं जाता 17
अमृत वेला 27
सिमरन 30
धन्य अजायब 34

सन्त बानी आश्रम - 16 पी.एस., वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039, जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्रीगंगानगर-335 001 राजस्थान से प्रकाशित किया।
फोन 099 50 55 66 71 व 098 71 50 19 99

● उपसम्पादक : नन्दिनी ● विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन 099 28 92 53 04
● अनुवादक : मास्टर प्रताप सिंह ● संपादकीय सहयोगी : ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in - 123 - Website : www.ajaibbani.org

ऐहे ते देश पराया ओऐ सजणा

ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना, पाया ओऐ सजणा, (2)
ऐहे ते देश, पराया ओऐ सजणा,

1. *आया जो ऐत्थे, सबने तुर जाणा,*
रहना ना ऐत्थे, कोई राजा राणा, (2)
जिंदगी बिरछ दी, छाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

2. *कोई दिन ऐत्थे, रैण बसेरा,*
झूठे सब नाते, कोई ना तेरा, (2)
सतगुरु ने, समझाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

3. *करके सिमरन, मन समझा लै,*
भुल्लां गुरु तों, माफ करा लै, (2)
दाते दा नां क्यों, भुलाया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

4. *पल्ला गुरु, कृपाल दा फड़ लै,*
भवसागर तों, 'अजायब' तूं तर लै, (2)
झूठा जगत, झूठी माया ओऐ सजणा,
तू प्यार क्यों ऐना .....

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी

भ्रम की नगरी

वारां - भाई गुरदास जी

बैंगलोर

हमारा शरीर एक मन्दिर है, इस सच्चे मन्दिर को बनाकर परमात्मा खुद इसमें बैठ गया है। हमें इस नर देही को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या या नफरत से नष्ट नहीं करना चाहिए।

किसी को यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि बादशाह गंदे घर में आकर बैठेगा; कुत्ता भी गंदी जगह पर नहीं बैठना चाहता। हम किस तरह उम्मीद करते हैं कि परमपिता परमात्मा जोकि परम पवित्र है वह आए और इस गंदे घर में रहे।

महात्मा हमें कहते हैं कि किसी के दिल को चोट मत पहुँचाओ। शरीर पर हथियार का घाव तो भर सकता है लेकिन कठोर शब्दों का वार कभी नहीं भरता। अगर कोई हमारा विरोध करता है, हमारे लिए बुरे विचार रखता है या हमारी निन्दा करता है तो भी हमें उसे उसी तरीके का जवाब नहीं देना चाहिए, उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिए।

सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैं, ''जो लोग आपका बुरा करते हैं आप उनका भला करें अगर आप अपने दिल में उनके लिए क्रोध नहीं रखेंगे तो आपको सब कुछ मिल जाएगा।''

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। आप मुझे यह कहानी सुनाया करते थे कि एक गरीब आदमी अपनी गरीबी से बहुत दुःखी था। उसने सोचा! मैं आत्महत्या क्यों न कर लूँ? मैं जंगल में चला जाऊं शायद कोई शेर आ जाए मुझे खा ले तो मेरे दुःखों का अंत हो जाएगा! वह जंगल में चला गया। जब उसने शेर को अपनी ओर आते देखा तो वह बहुत खुश हुआ कि शेर आ गया है वह मुझे खा लेगा तो मेरे दुःखों का अंत हो जाएगा।

शेर उस आदमी को देखकर बहुत हैरान हुआ कि मुझे देखकर इंसान भयभीत होकर काँपने लगता है लेकिन यह आदमी मुझे देखकर खुश हो रहा है। शेर ने उससे पूछा कि तुम मुझे खुश दिखाई दे रहे हो ऐसा क्यों है? उसने कहा कि मैं अपनी गरीबी से दुःखी हो चुका हूँ इसलिए मैं यहाँ आया हूँ अगर कोई शेर मुझे खा ले तो मेरे दुःखों का अंत हो जाएगा। अब मैं खुश हूँ कि मेरे बुरे दिन खत्म हो गए हैं और मैं मरने वाला हूँ।

शेर को उस आदमी पर दया आ गई और शेर ने उससे कहा, ''मैं तुम्हारी ईमानदारी की कद्र करता हूँ, मेरे दिल में तुम्हारे लिए दया है। मैंने आज तक जिन लोगों को मारकर खाया है उनके गहने मेरे पास रखे हुए हैं, मैं उसमें से तुम्हें कुछ दे देता हूँ।'' शेर ने उसे कुछ सोने के गहने और हीरे दे दिए। वह धनवान हो गया और वापिस अपने घर आकर सुख का जीवन बिताने लगा।

इस तरह समय बीतता गया। उसे जब भी कभी सोने की जरूरत होती तो वह शेर के पास चला जाता। अब दोनों अच्छे मित्र बन गए थे। एक बार उसके परिवार में शादी थी। उसकी पत्नी ने कहा कि आप अपने अच्छे दोस्त को भी शादी का निमंत्रण दें क्योंकि हम आपके इसी मित्र के कारण अमीर हुए हैं। उसने कहा कि वह शादी में नहीं आएगा इसलिए हमें उसे निमंत्रण नहीं देना चाहिए। पत्नी ने कहा कि आप उसे अवश्य निमंत्रण दें।

वह शेर के पास गया और उसे शादी में आने के लिए निमंत्रण दिया। शेर ने उसे जवाब दिया हम अच्छे दोस्त हैं लेकिन हमें अपनी दोस्ती अपने तक ही रखनी चाहिए। मैं एक जानवर हूँ और तुम आदमी हो मेरा तुम्हारे यहाँ शादी में आना अच्छा नहीं होगा लोग हमारी दोस्ती की कद्र नहीं करेंगे लेकिन उसने जिद् की कि तुम्हें जरूर आना है; आखिर शेर शादी में आ गया।

जब लोगों ने शेर को उस आदमी के साथ आते हुए देखा तो लोग डर के मारे काँपने लगे और एक कमरे में छिप गए उस समय गर्मी नहीं थी फिर भी लोगों को पसीना आ गया। उसकी पत्नी ने उस पर ताना कसते हुए कहा, ''तुम्हें आदमी को अपना दोस्त बनाना चाहिए था न कि कुत्ते-बिल्लियों को।'' यह सुनकर शेर के दिल को चोट लगी लेकिन उसने मेहमान के रूप में वहाँ जितना समय बिताना था बिताया।

कुछ समय बाद वह अपने मित्र के साथ जंगल में वापिस चला गया। शेर ने अपने मित्र से कुल्हाड़ी लाने के लिए कहा। जब वह कुल्हाड़ी लाया और विदा लेने लगा तो शेर ने उससे कहा, ''प्यारे! तुम इस कुल्हाड़ी को मेरे माथे पर मारो।'' उस आदमी ने कहा कि तुम मेरे बहुत अच्छे मित्र हो मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? शेर ने कहा, ''तुम मेरे अच्छे मित्र हो इसलिए तुम्हें मेरा यह काम जरूर करना पड़ेगा।'' शेर की इच्छा के अनुसार उसने शेर के माथे पर कुल्हाड़ी का प्रहार किया जिससे गहरा घाव हो गया। आदमी अपने घर लौट आया।

आप जानते हैं कि माया पेड़ की छाया की तरह है। यह एक जगह नहीं रहती, कुछ समय इधर रहती है तो कुछ समय उधर रहती है। कुछ समय बाद उस आदमी का सारा धन खत्म हो गया तो उसे धन की जरूरत पड़ी। तब उसने सोचा कि मैं अपने मित्र के पास जाऊँ! शेर ने पहले की तरह ही उसका सतकार किया। थोड़ी देर बाद शेर ने उससे पूछा, ''प्यारे दोस्त! तुमने कुल्हाड़ी से जो घाव मेरे माथे पर लगाया था क्या वह घाव अब भी है?'' आदमी ने शेर का माथा देखा; घाव पूरी तरह भर गया था। शेर ने कहा, ''तुमने जो घाव मेरे माथे पर लगाया था वह मिट गया है लेकिन तुम्हारी पत्नी ने जो कठोर शब्द कहे थे वे शब्द अभी भी मेरे दिल में हैं और मुझे परेशान कर रहे हैं।''

सन्त-सतगुरु कहते हैं कि प्यारेयो! किसी को भी कठोर शब्द न बोलें। हमें किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए। हम

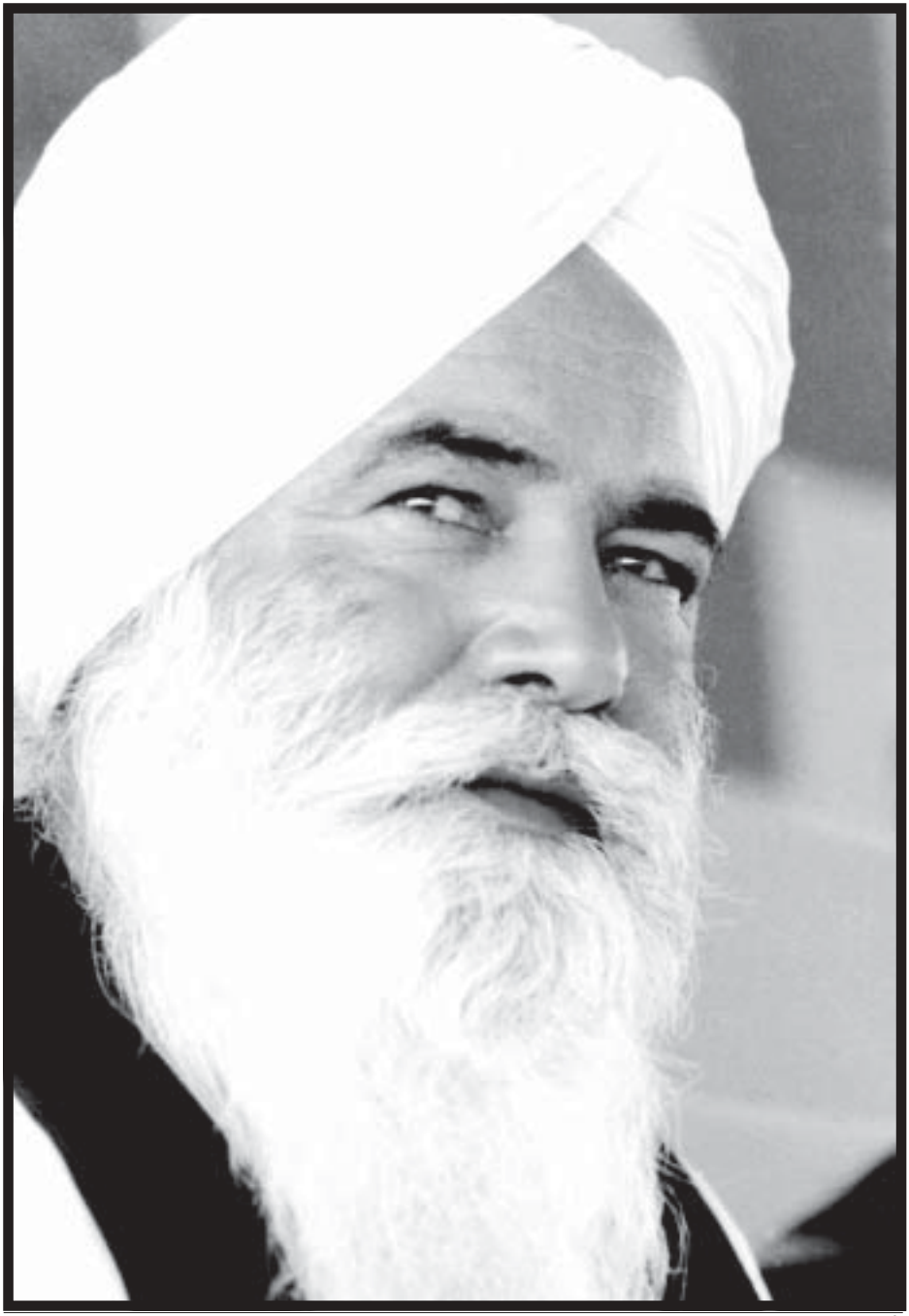

कठोर शब्दों से जो घाव लगाते हैं वे कभी नहीं भरते, शरीर का घाव भर जाता है लेकिन दिल का घाव नहीं भरता।

सिर्फ 'नाम' ले लेने से ही सतसंगी नहीं बन जाता। शिष्य जब तक गुरु की हिदायतों के अनुसार अपना जीवन नहीं ढ़ालता वह गुरु का शिष्य नहीं बन सकता। रत्ती भर का अभ्यास सैंकड़ो ग्रन्थों के पढ़ने से अच्छा है। भजन-अभ्यास के बिना विद्वान भी किताबों के वजन से लदे हुए गधे की तरह है।

लंका का राजा रावण बहुत विद्वान था। उसने चार वेदों का बहुत अच्छा टीका किया था लेकिन उसका सारा ज्ञान झूठ साबित हुआ। उसने सीता का अपहरण किया जबकि इस बात को बीते हुए बहुत समय हो गया है फिर भी उत्तरी भारत में अभी तक हर साल रावण का पुतला जलाया जाता है।

जानकारी के लिए पुस्तकें पढ़ना अच्छा है अगर कोई यह सोचे कि वह पुस्तके पढ़ने से अंदर जा सकता है तो वह गलती पर है।

हरि चंदुअरी देखि कै करदे भरवासा।
थल विच तपनि भठीआ किउ लहै पिआसा।

मैं कहा करता हूँ कि दूसरों को शिक्षा देने से अभ्यास करना बेहतर है। दूसरों को शिक्षा देने की बजाय आदमी भक्ति करे और अंदर परमात्मा से मिले।

भाई गुरदास जी फरमाते हैं, ''यह संसार **भ्रम की नगरी** है। लोग इसे बड़ा और बहुत अच्छा समझते हैं लेकिन यह सच नहीं है; यह मृगतृष्णा है। आप जानते हैं कि जब हिरण प्यासा होता है तो वह सोचता है कि सड़क पर पानी है लेकिन पानी नहीं होता यह तो सड़क और सूरज की परछाई होती है। हिरण परछाई के पीछे दौड़ता है लेकिन उसे पानी नहीं मिलता। उसकी प्यास और बढ़ जाती है; यह

केवल भ्रम होता है।'' कबीर साहब कहते हैं, ''कोई भी कागज की नाव से नदी पार नहीं कर सकता जो ऐसा सोचते हैं वे भ्रम में हैं।''

सुहणे राजु कमाईऐ करि भोग बिलासा।
छाइआ बिरखु न रहै थिरु पुजै किउ आसा।

राजा-महाराजा सोचते हैं कि वह सदा ही संसार में सुख भोगते रहेंगे लेकिन यह माया तो पेड़ की छाया की तरह है जो कभी इधर होती है तो कभी उधर होती है।

बाजीगर दी खेड जिउ सभु कुडु तमासा।
रलै जु संगति मीणिआ उठि चलै निरासा।।

अब आप फरमाते हैं कि हम खुद ही संसार के रंगों को फीका पड़ते हुए देखते हैं। इस बात का अर्थ यह है कि जो झूठे गुरु पार्टियाँ बनाकर बड़े स्टेज लगवाकर दूसरे लोगों को प्रभावित करते हैं उनके पीछे लगने वालों के हाथ निराशा ही लगती है। यह संसार एक बाजीगर के खेल की तरह है जोकि सच नहीं होता। ऐसे लोगों की संगत से कुछ नहीं मिलता; हमारे हाथ केवल निराशा ही लगती है।

भाई गुरदास जी प्यार से कहते हैं कि भेड़ की पूँछ पकड़कर नदी पार नहीं की जा सकती अगर गाय की पूछ पकड़ेंगे तो आसानी से पार हो जाएंगे। अगर आप मुक्ति चाहते हैं तो आपको पूर्ण गुरु के पास जाना पड़ेगा; अधूरे और झूठे गुरु के पास जाने का कोई फायदा नहीं।

भाई गुरदास जी के कहने का मतलब है कि जो लोग गुरुओं की गद्दी पर कब्जा जमा लेते हैं उनमें ईर्ष्या और नफरत होती है। उनमें दूसरों का भला करने की ताकत नहीं होती। उन्हें मालिक की तरफ से हुक्म नहीं होता हम उनसे कोई फायदा प्राप्त नहीं कर सकते।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''आप यह न देखें कि किस स्कूल में ज्यादा बच्चे पढ़ते हैं? आप यह देखें कि किस स्कूल के

ज्यादा बच्चे पास होते हैं। आप यह न देखें कि किस गुरु के पास ज्यादा लोग जाते हैं? आप यह देखें कि किस गुरु के नामलेवा ज्यादा भजन-अभ्यास करते हैं और कितने लोग गुरु की बताई हिदायत के मुताबिक अपना जीवन बिताते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप अंदर जाकर देखें कि जिन लोगों की किताबें दुनियां में मशहूर थी वे किस तरह आंतरिक मंडलों में फँसे हुए हैं।''

महाराज कृपाल एक महान लेखक थे फिर भी आप कहा करते थे, ''किताबें लिखना मन और बुद्धि का काम है। जहाँ मन और बुद्धि समाप्त हो जाते हैं वहाँ से रूहानियत की शुरूआत होती है। मन और बुद्धि अज्ञानी हैं।''

कोइल काँउ रलाईअनि किउ होवनि इकै।
तिउ निंदक जग जाणीअनि बोलि बोलणि फिकै।
बगुले हंसु बराबरी किउ मिकनि मिकै।
तिउ बेमुख चुणि कठीअनि मुहि काले टिकै।
किआ नीसाणी मीणिआ खोटु साली सिकै।
सिरि सिरि पाहणी मारीअनि ओइ पीर फिटिकै।।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''कोयल और कौआ एक जैसे दिखाई देते हैं लेकिन जब वे बोलते हैं तो आसानी से फर्क समझ आ जाता है। कोयल मीठी बोली बोलती है और कौआ कड़वी बोली बोलता है। इसी तरह गुरमुख और मनमुख का फर्क आसानी से समझा जा सकता है। गुरमुख सदा मालिक की मौज को स्वीकार करते हैं वे जहाँ जाते हैं सबसे प्यार करते हैं भजन-अभ्यास करते हैं और दूसरे लोगों से भी भजन-अभ्यास करवाते हैं; वे किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाते लेकिन मनमुख जहाँ जाते हैं दूसरों की निन्दा करते हैं और स्वयं की

प्रशंसा करते हैं। हंस और बगुला दोनों सुंदर दिखाई देते हैं। हंस मोती चुगता है और बगुला मछली खाता है।''

महात्मा चतुरदास ने कहा है, ''बगुले का रूप बहुत सुंदर होता है। वह पानी में एक टाँग पर खड़ा होता है जैसे वह परमात्मा की भक्ति कर रहा है लेकिन उसका मन मछली खाने के लिए भटक रहा होता है। उसे परमात्मा कैसे मिल सकता है?''

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''मनमुख खज़ाने से निकले हुए खोटे सिक्के की तरह होते हैं। जब खोटा सिक्का खज़ाने में जाता है तो उस पर एक खास निशान लगा दिया जाता है फिर उसे कोई स्वीकार नहीं करता। उसी तरह से जब ऐसे निन्दक परमात्मा की दरगाह में जाते हैं तो उनके माथे पर निशान लगा होता है वे परमात्मा की दरगाह से ठुकरा दिए जाते हैं। लोग उन्हें गालियाँ देते हैं और उनके गुरु को भी गालियाँ देते हैं क्योंकि ऐसे लोग गुरु द्वारा ठुकराए हुए होते हैं; संसार के लोग भी उन्हें ठुकरा देते हैं।''

राती नींगर खेलदे सभ होइ इकठे।
राजा परजा होवदे करि साँग उपठे।
इकि लसकर लै धावदे इकि फिरदे नठे।
ठीकरीआँ हाले भरनि उइ खरे असठे।
खिन विचि खेड उजाड़िदे घरु घरु नूँ त्रठे।
विणु गुणु गुरु सदाइदे ओइ खोटे मठे।।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि यह एक ऐसा मामला है जिसमें हमें किसी दूसरे की जरूरत नहीं हमने खुद अपने अंदर झाँककर देखना है कि हम कौन हैं और क्या हैं? आप प्यार से बच्चों की एक उदाहरण देकर समझाते हैं कि बच्चे रात को इकट्ठे होकर खेलते हैं। वे राजा और प्रजा बनते हैं। उनमें से कुछ अच्छे लड़के बनते हैं और

कुछ बुरे लड़के बनते हैं। वे कंकड़ पत्थरों को पैसा कहकर पुकारते हैं। इस खेल में अच्छे लड़के बुरे लड़कों का पीछा करके उनसे जुर्माना वसूल करते हैं। खेल खेलने के बाद वे सब कुछ नष्ट कर देते हैं।

भाई गुरदास जी कहते हैं जो गुरु बनकर उन बच्चों की तरह खेलते हैं और आखिर में खेल खत्म कर देते हैं ठीक उसी तरह आदमी को अपने अंदर पता लगाना चाहिए कि उसके अंदर क्या चल रहा है?

उचा लंमा झाटुला विचि बाग दिसंदा।
मोटा मुढु पतालि जड़ि बहु गरब करंदा।
पत सुपतर सोहणे विसथारु बणंदा।
फुल रते फल बकबके होइ अफल फलंदा।
सावा तोता चुहचुहा तिसु देखि भुलंदा।
पिछो दे पछुताइदा ओहु फलु न लहंदा।

भाई गुरदास सेमल पेड़ की उदाहरण दे रहे हैं। सेमल पेड़ की कहानी आपने आसा जी दी वार-*परमात्मा के रंग* में पढ़ी होगी। सेमल पेड़ बहुत ऊँचा और सुंदर होता है, उस पर बहुत सुंदर फूल लगते हैं। जब तोता फलों की आशा में पेड़ के पास जाता है जैसे ही फल में चोंच फँसाता है तो निराश होकर लौट आता है। वहाँ एक छोटी की झाड़ी पर बहुत स्वादिष्ट फल होते हैं तोता उन फलों को खाकर खुश होता है।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''यहाँ छोटे-बड़े का सवाल नहीं। छोटी सी झाड़ी जो अच्छे फल देती है वह उस ऊँचे बड़े पेड़ से बेहतर है जिसमें कोई गुण नहीं होता।''

भाई गुरदास जी किसी की निन्दा नहीं करते। आप कहते हैं कि आमतौर पर लोग बड़े डेरों की तरफ आकर्षित होते हैं। जहाँ उन्हें रहने के लिए अच्छे कमरे मिल सकें और उनकी देखभाल के लिए बहुत से सेवादार हों। तब वे लोग कहते हैं कि सच्चाई यहाँ पर है लेकिन आखिर में उन्हें वहाँ से निराशा के अलावा कुछ नहीं मिलता क्योंकि परम पिता परमात्मा ने उनमें आत्माओं को तारने की ताकत नहीं रखी होती, उनको गुरुमत की शिक्षा देने का अधिकार नहीं होता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरुमुख कोट उद्धार दा दे नामें दी ईक कणी।

शुरू-शुरू में एक प्रेमी निर्मल सिंह ने मुझसे पूछा, ''आपका सेक्रेटरी कौन है? आपकी कमेटी का चेयरमैन कौन है और कमेटी में कितने सदस्य है?'' मैंने उसे बताया, ''प्यारेया! मुझमें सेक्रेटरी, चेयरमैन रखने की ताकत नहीं। मैं तो यहाँ पर अकेला हूँ। मैं सतगुरु कृपाल का एक गरीब सेवक हूँ, मैं रोजी-रोटी खुद कमाता हूँ और यहाँ भजन-अभ्यास करता हूँ। मेरे पास कोई दूसरा आदमी नहीं है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच आखिर सच होता है।'' सच्चाई को प्रचार की जरूरत नहीं होती। जो महात्मा 'नाम' के अमृत

में समा जाते हैं वे न किसी की निन्दा करते हैं और न ही किसी को निन्दा करने की इज़ाज़त देते हैं। ऐसे महात्मा पार्टियाँ नहीं बनाते उनका गुरु ही उनकी पार्टी होता है; उनका गुरु ही चेयरमैन होता है।

पहिनै पंजे कपड़े पुरसावाँ वेसु।
मुछाँ दाढ़ी सोहणी बहु दुरबल वेसु।
सै हथिआरी सूरमा पंचीं परवेसु।
माहरु दड़ दीबाण विचि जाणै सभु देसु।
पुरखु न गणि पुरखतु विणु कामणि कि करेसु।
विणु गुर गुरु सदाइदे कउण करै अदेसु।।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो गुरु का मुख बन जाता है वही गुरुमुख है। गुरुमुख वही करता है जो उसके गुरु ने किया होता है। गुरु ने भजन-अभ्यास किया होता है, गुरुमुख भी वही करता है।''

अब भाई गुरदास जी फरमाते हैं कि जो भजन-अभ्यास नहीं करता जिसने अपने अंदर गुरु को प्रकट नहीं किया होता, जिसने गुरु के असली स्वरूप को नहीं देखा होता वह गुरमुख नहीं बन सकता; वह किन्नर की तरह होता है। वह आदमी की तरह दिखाई तो देता है उसकी दाढ़ी मूछें भी होती है उसका मुख भी आकर्षक होता है। वह राजकाज में ऊँचा ओहदा भी रखता है लेकिन वह किन्नर ही होता है; वह न पुरुष होता है और औरत ही होता है।

आखिर में भाई गुरदास कहते हैं कि जिन लोगों ने भक्ति नहीं की होती, जिन्होंने अपने अंदर गुरु के स्वरूप को प्रकट नहीं किया होता; अपने आपको गुरु का रूप नहीं बनाया होता अगर वे दूसरों को शिक्षा देते हैं और गुरु बनने का दिखावा करते हैं तो वे खुद धोखे में हैं और दूसरों को भी धोखा देते हैं।

* * *

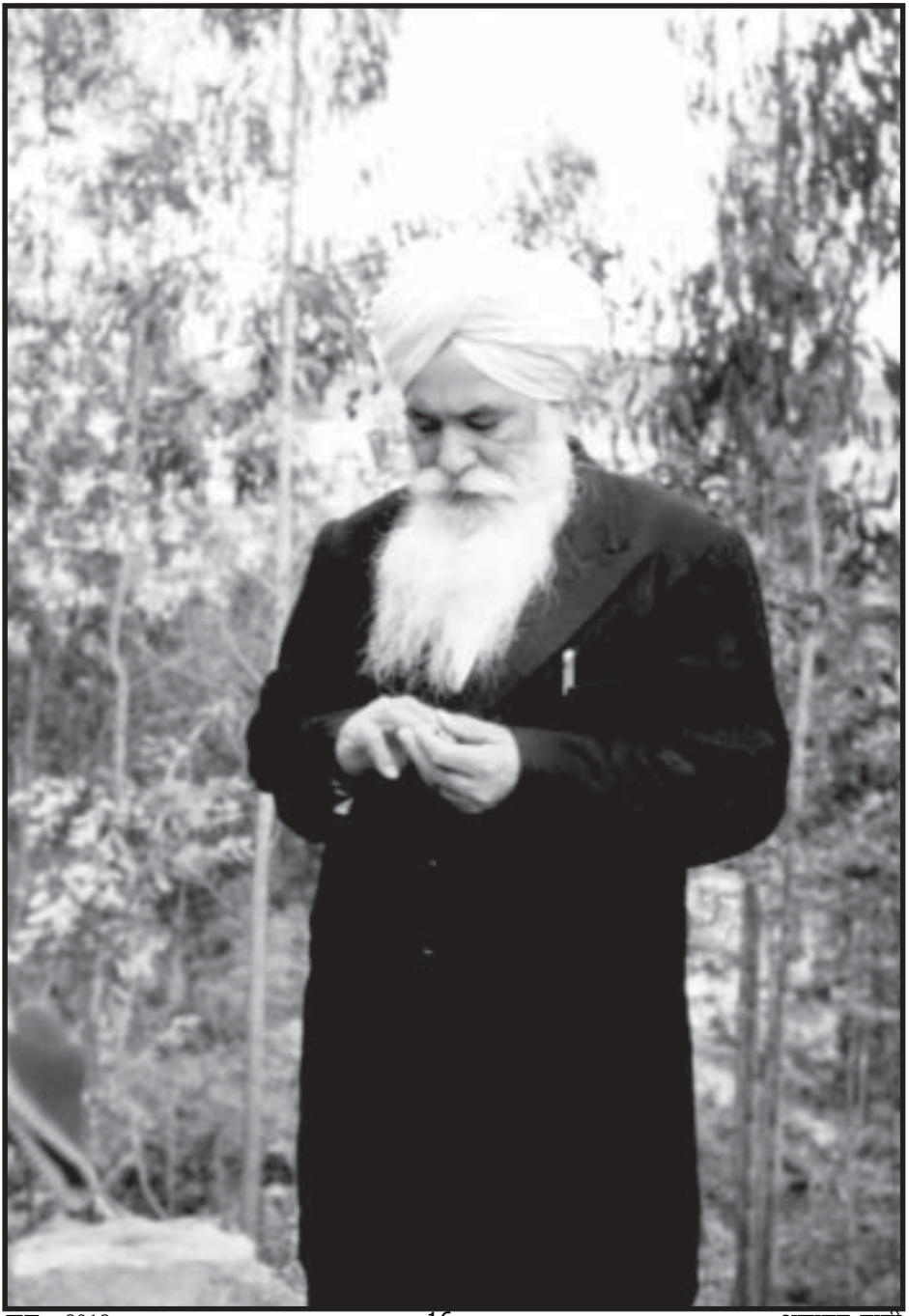

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

गुरु कभी दूर नहीं जाता

परमात्मा सावन-कृपाल का धन्यवाद है जिन्होंने हमें अपना यश गाने का मौका दिया। प्यारेयो! सच तो यह है कि गुरु की बड़ाई और गुरु का यश गाने के लिए हमें अपनी जीभ या होठ हिलाने की जरूरत नहीं। जब हम अंदर से गुरु के साथ जुड़ जाते हैं तब हमारी आँखें हिलना बंद हो जाती हैं, सिमरन के साथ लय मिल जाती है तभी हम गुरु का यश गा सकते हैं और गुरु के सच्चे गुरु भक्त बन सकते हैं।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''अपना आप त्यागकर चित्त को स्थिर करना ही गुरु में लीन होना है।'' हम अपने आपका त्याग तभी कर सकते हैं जब हम नौं द्वारे खाली करके शरीर की चेतना से ऊपर उठें और गुरु के आकर्षक स्वरूप को अपने हृदय में बसा लें। गुरु का सुंदर स्वरूप किसी कैमरे में कैद नहीं किया जा सकता।

जब हम यह कहते हैं कि हमारा गुरु बहुत सुंदर है तो लोग इस बात को नहीं समझते। बहुत से लोगों ने उस सुंदर रूप के दर्शनों के लिए अपना घर-बार छोड़ दिया, खाना-पीना छोड़ दिया और लकड़ी की तरह सूख गए फिर भी बदकिस्मती से उन्हें उस सुंदर स्वरूप के दर्शन नहीं हो सके क्याकि वह तो उनके अंदर ही था।

प्यारेयो! हमें उस सुंदर स्वरूप के दर्शन तभी हो सकते हैं जब हम अंदर जाएं। वह रूप इतना सुंदर है कि उसके आगे परियों की सुंदरता भी कोई मायना नहीं रखती। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे हो जाए हूर परंदरी।

जब परमात्मा कृपाल ने इस गरीब आत्मा पर दया बरसाई तो पहली ही मुलाकात में आपने मुझे अपना सुंदर रूप दिखाया। वह ऐसा

स्वरूप था जिसमें से प्यार की किरणें बाहर आ रही थी। उस समय मैंने आपसे प्रार्थना की, ''हे मेरे परमात्मा! आपने दया करके जो प्रकाशवान रूप मुझे दिखाया है अगर आप अपना यह स्वरूप दुनियां को दिखा दें तो संसार में मंदिर, मस्जिद और गिरजाघरों के लिए लड़ाई नहीं होगी। मंदिरों में पंडित लोगों को जगाने के लिए घंटा बजाते हैं वह घंटा नहीं बजाएंगे। मौलवी जोर-जोर से अल्लाह का नाम पुकारते हैं सोचते हैं! परमात्मा बहरा है वे चिल्लाना बंद कर देंगे उन्हें अहसास हो जाएगा कि परमात्मा सबके अंदर है।'' परमात्मा कृपाल ने हँसकर कहा, ''तू लोगों से मेरे कपड़े मत फड़वा।''

आप जानते हैं कि कमल का फूल सूरज को चाहता है। जब सूरज उगता है तो कमल खिल जाता है और अपनी खुशी जाहिर करता है। कमल के फूल को देखकर लोग खुश होते हैं इसी तरह जिसे गुरु के अंदरूनी स्वरूप के दर्शन हो जाते हैं वह भी खुश हो जाता है तो दूसरे लोग भी उसे देखकर खुशी महसूस करते हैं। लोग हैरान होते हैं कि इसे क्या हो गया है लेकिन वे लोग असलियत को नहीं जानते कि इस आदमी के पास क्या है?

मैं जब प्यारे कृपाल से मिला आपने दया करके मुझे अपना अंदरूनी स्वरूप दिखाया तो मेरी हालत भी वैसी ही हो गई; मुझपर आपके प्यार का नशा छा गया। मेरे आसपास के और मेरे परिवार के लोग हैरान हो गए कि मुझे क्या हो गया है? मेरा एक भाई मुझे ईलाज के लिए अमृतसर ले जाना चाहता था उसे लगा कि मैं पागल हो गया हूँ। मेरे परिवार के लोगों ने हुजूर कृपाल से शिकायत की कि आपने हमारे लड़के को कुछ कर दिया है यह पागल हो गया है।

मैं अपने उस भाई से हमेशा नाराज़ रहता था कि उसने हुजूर कृपाल को ऐसा क्यों कहा। वह नहीं जानता था कि मुझे परमात्मा कृपाल ने क्या दिया है? मैं अपने उस भाई से कभी-कभी ही मिला

करता था। वह मुझे महंत कहकर बुलाया करता था। मेरे उस भाई ने जब शरीर छोड़ा तब वह बीमार नहीं था। एक दिन वह अपने खेत से वापिस आ रहा था घर आते ही उसने कहा कि मुझे चार कसाईयो ने पकड़ लिया है उस समय कुछ रिश्तेदार भी मिलने आए हुए थे। थोड़ी देर बाद ही उसने उन रिश्तेदारों से कहा अब उन कसाईयों ने मुझे छोड़ दिया है क्योंकि महंत के गुरु ने मुझे बचा लिया है, यह कहकर उसने शरीर छोड़ दिया।

प्यारेयो! अगर मेरे उस भाई ने महाराज कृपाल का अंदरूनी रूप देखा होता तो वह आपको ऐसे शब्द न कहता। जो परमात्मा को अंदर देखता है आप उसके चेहरे को देखकर खुशी महसूस करते हैं लेकिन जो लोग नहीं जानते कि क्या हो रहा है वे हैरान ही रहते हैं।

मेरे भाई को आखिरी समय में गुरु के स्वरूप के दर्शन हुए तो उसने अपने परिवार के सदस्यों से कहा कि आप लोगों को सतसंग में

जाना चाहिए। उसकी मृत्यु के बाद मेरे परिवार के सदस्य सतसंग में आने लगे, उन्हें 'नामदान' मिला और वे सेवा भी कर रहे हैं। अब वे लोग लंगर की सेवा के लिए अपने खेत से गेहूँ, सोयाबीन और दूसरी चीज़े लाते हैं और लगातार सतसंग में हाजिरी लगा रहे हैं। अगर मेरे भाई को उसके जीवनकाल में 'नाम' मिल जाता, वह सिमरन करता तो गुरु का अंदरूनी स्वरूप अपने अंदर देख लेता। पता नहीं वह अपने जीवन में कितना फायदा उठाता और अपना जीवन सुधार लेता।

जो प्रेमी गुरु के लंगर के लिए चक्की में गेहूँ को पीसकर आटा बनाते हैं, पानी लाते हैं और हर तरह की सेवा करते हैं; वे यह सब इसलिए करते हैं क्योंकि वे सेवा करते हुए गुरु के स्वरूप की झलक महसूस करते हैं।

जब तक हम मन के दास हैं, हम सोचते हैं कि हम गुरु के आगे यह सवाल रखेंगे लेकिन देखा गया है कि जब ये प्यारे यहाँ आते हैं तो उन्हें अहसास होता है कि हमें क्या करना चाहिए? वे जब भजन-अभ्यास करते हैं थोड़ा सा आँखों के बीच पहुँचना शुरू कर देते हैं फिर उनका कोई सवाल नहीं रह जाता। उन्हें अपने सवालों के जवाब मिल जाते हैं। तब वे कहते हैं कि हमारे पास कोई सवाल नहीं हम सिर्फ आपके दर्शन करने के लिए आए हैं।

कुछ प्रेमी अहमदाबाद प्रोग्राम में थे, यहाँ इस प्रोग्राम में भी हैं, उन्हें याद होगा कि एक बार सवाल-जवाब का प्रोग्राम था तो मैंने पूछा आपका कोई सवाल है? उन प्रेमियों ने कहा कि हमारा कोई सवाल नहीं हम चाहते हैं कि आप हमारे सामने बैठे रहें और हम आपके दर्शन कर सकें। उन लोगों ने इस शरीर से प्यार की किरणें आती देखी होंगी इसलिए वे उन प्यार की किरणों का आनन्द लेना चाहते थे।

मैंने पहले भी कई बार बताया है कि मुझे जिन पठानों से महाराज सावन सिंह जी के बारे में पता लगा था वे दोनों महाराज सावन सिंह

जी के नामलेवा थे। वे आपस में बातें कर रहे थे, ''गुरु बहुत सुंदर हैं।'' जब मैंने उन्हें ऐसी बातें करते हुए सुना तो मेरे दिल में इच्छा हुई कि मैं भी ऐसे गुरु से मिलूँ। मैं महाराज सावन सिंह जी के बारे में जानना चाहता था इसलिए मैं उनसे मिलने चला गया।

उस समय महाराज सावन सिंह जी पाँच तत्त्वों के इंसानी चोले में थे। दुनियां के बहुत से लोगों ने उन्हें देखा लेकिन किसी ने भी उन पठानों की तरह सुंदर महसूस नहीं किया। अगर और लोगों ने भी ऐसा ही अहसास किया होता कि सावन सिंह जी बहुत सुंदर हैं तो उन सबको उनकी सुंदरता का फायदा होता और उन्हें मुक्ति मिल जाती।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त परमात्मा का दर्पण होते हैं। जब हम उनसे मिलने जाते हैं तो हम अपने गुणों के अनुसार ही उनकी तरफ देखते हैं। जब हम गुरु के चेहरे की ओर देखते हैं तो हम वहाँ अपनी ही छवि देखते हैं। परमात्मा ने अपने ही रूप में सच्चे-सुच्चे सन्त सतगुरु बनाए। सन्त एक बर्फ के टुकड़े से भी ज्यादा पवित्र हैं। वे दर्पण की तरह हैं। दर्पण में कोई दोष नहीं अगर आप दर्पण के सामने मुस्कुराता हुआ चेहरा लेकर जाते हैं तो आप अपने आपको मुस्कुराता हुआ देखते हैं अगर आप दर्पण के सामने रोते हुए खड़े हो जाएंगे तो आप अपने आपको रोता हुआ देखेंगे। हम जिस भाव से गुरु के पास आते हैं हम उसकी वैसी ही छवि पाते हैं।''

वे लोग भाग्यशाली हैं जिन्हें गुरु के अंदरूनी सुंदर प्रकाशवान स्वरूप को देखने की दया प्राप्त हुई। जो गुरु के शरीर से प्यार की किरणों को बाहर आते हुए देख लेते हैं वे दुनियां के रस्मों-रिवाज की परवाह नहीं करते। जिन्हें एक बार गुरु के अंदरूनी रूप के दर्शन हो जाते हैं वे हमेशा उन प्रेम की किरणों को पाने की इच्छा रखते हैं।

पपीहा हर समय बारिश की कामना करता है। पपीहा सोचता है कि उसकी पुकार सुनकर परमात्मा इन्द्र देवता को हुक्म देगा कि वह

बरसे और उसकी प्यास बुझाए। इसी तरह जिसके अंदर गुरु के स्वरूप से आ रही प्रेम की किरणों को देखने की इच्छा है वह अपने ही रूप में प्रेम की किरणों को उत्पन्न करता है और गुरु के प्रकाशमान रूप को देखने योग्य बनाता है।

परम पिता परमात्मा किसी पहाड़ के पीछे या समुद्र की गहराई में छिपा हुआ नहीं वह हमारे बहुत नज़दीक हमारे अंदर बैठा है। वह हमारी हर हरकत के बारे में जानता है। जिसने अपने अंदर गुरु के प्रकाशमान स्वरूप को प्रकट कर लिया उसे कोई फर्क नहीं पड़ता जब गुरु अपना शारीरिक रूप छोड़ देता है उसकी नजरों से गुरु का शारीरिक रूप दूर हो जाता है तो वह रोता है। उसके शरीर के हर सूक्ष्म भाग से आँसु निकलते हैं क्योंकि वह संगत का नुकसान होते हुए देखता है और आँसु बहाता है। गुरु हरदम उसके अंदर है फिर भी वह गुरु के शारीरिक रूप के सामने बैठना चाहता है। वह उस समय को याद करता है जब वह गुरु के सामने बैठता था और गुरु के शरीर से निकलने वाली किरणों का आनन्द उठाता था।

गुरु हर समय उसके अंदर है लेकिन वह देखता है कि जिन लोगों ने गुरु स्वरूप को अपने अंदर प्रकट नहीं किया वे अब गुरु के शारीरिक रूप से चले जाने के बाद नुकसान उठा रहे हैं। एक आज्ञाकारी बेटे को पिता की आज्ञा मानकर खुशी मिलती है लेकिन जब पिता दूर चला जाता है तो वह रोता है क्योंकि वह पिता की कमी महसूस करता है। इसी तरह जिस शिष्य के अंदर गुरु का स्वरूप प्रकट है फिर भी वह चाहता है कि उसका प्यारा गुरु उसके सामने बैठा हो।

जब गुरु शारीरिक रूप में मौजूद होता है तब वह कहता है, ''मेरे प्यारे गुरु! मैं आपको अपने सामने बैठा देखकर खुश हूँ।'' जब गुरु शारीरिक रूप में नहीं होता तो वह रोता है क्योंकि वह जानता है कि दर्शनों का क्या लाभ है और प्रेम की किरणों से मिलने वाले आनन्द

की क्या कीमत है? अगर संगत में सब प्रेमी यह महसूस करें कि गुरु कहीं नहीं गया उसने केवल शरीर बदला है तो किसी प्रेमी को कोई परेशानी नहीं होगी। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु मेरा सदा सदा न आए न जाए।
ओह अविनाशी पुरुष है हर जगह रहा समाए।

मैं जब पहले दूर पर बाहर गया उस समय संगत में बहुत परेशानी थी। मैंने वहाँ जाकर यही कहा, ''जो लोग यह कहते हैं कि उनका गुरु मर गया है, उन्हें कोर्ट में लाकर खड़ा करना चाहिए उनसे पूछना चाहिए कि उन्होंने जन्म-मरण वाला गुरु क्यों किया? गुरु कभी नहीं मरता वह सिर्फ शरीर ही बदलता है।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

मन लोचै गुर दर्शन ताईं, विलप करै चात्रक की न्याईं।
त्रिखा न उतरै शांत न आवै, बिन दर्शन सन्त प्यारे।

गुरु अर्जुनदेव जी के हर एक शब्द में गुरु के लिए प्यार टपकता है। आप कहते हैं, ''जिस तरह पपीहा स्वाति बूँद की इच्छा करता है उसी तरह मैं गुरु के दर्शनों की चाह रखता हूँ। जब तक गुरु के दर्शन नहीं होते मुझे शान्ति नहीं मिलती।''

गुरु रामदास जी ने अर्जुनदेव को किसी रिश्तेदार की शादी में लाहौर भेजा और साथ ही यह हुक्म दे दिया कि जब तक बुलाया न जाए तब तक वापिस नहीं आना। अमृतसर और लाहौर के बीच तीस मील की दूरी है। अर्जुनदेव रात को छत पर चढ़कर अमृतसर की तरफ देखते कि वहाँ से अमृतसर की रोशनी देख पाएं। आप जानते हैं कि बहुत दूरी थी और रास्ते में काफी उतार-चढ़ाव थे तो रोशनी कैसे दिख सकती थी। जो गुरु के प्यारे होते हैं वे गुरु की तरफ जाने वाली दिशा की तरफ देखकर खुश होते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

इक घड़ी ना मिलते तां कलयुग होता , हुण कद मिलीऐ प्रिय तुध भगवंता।
मोहे रैण न विहावै नींद न आवै, बिन देखे गुर दरबारे।

ज्योतिषियों की किताबों में कलयुग की उम्र चार लाख बत्तीस हजार साल लिखी हुई है, यह एक अंदाजा है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, '' हे मेरे प्यारे गुरु! मैं आपको एक पल भी न देखूँ तो ऐसा लगता है कि सारा कलयुग बीत गया है। मैं आपसे कब मिलूंगा? मुझे रात को नींद नहीं आती और दिन में आराम नहीं। मैं आपकी कमी महसूस करता हूँ मुझ पर दया करो और मुझे वापिस बुला लो।''

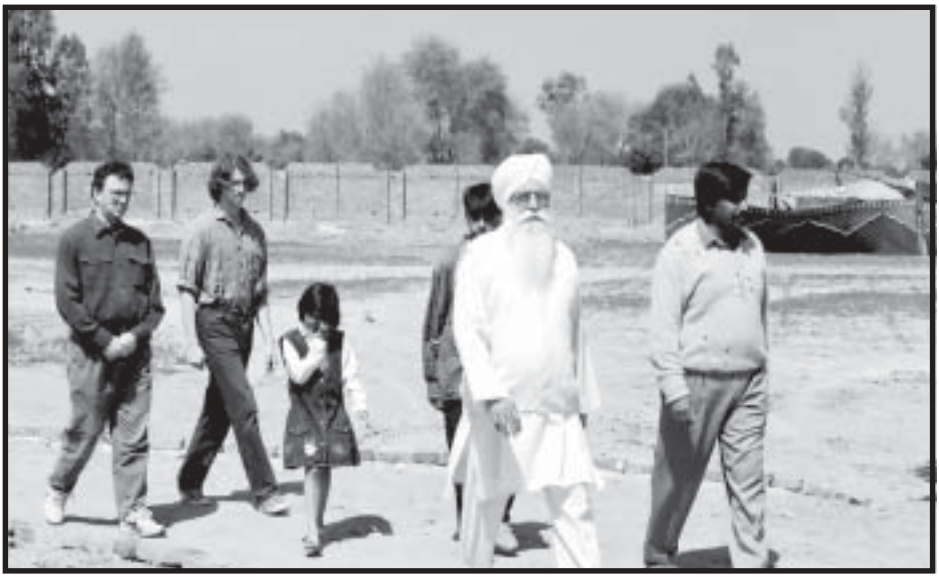

जब परमात्मा कृपाल ने इस गरीब आत्मा पर दया की, मैं उस समय आपसे कुछ भी नहीं कह सका। मैं डर रहा था कि अगर मैंने अपने प्यारे परमात्मा से कुछ कहा तो वह मुझसे नाराज हो जाएंगे। हे मेरे परमात्मा! मेरी अच्छी किस्मत है कि मैं आपको देख रहा हूँ। मेरी अभिलाषा है कि आपका स्वरूप मेरे अंदर स्थिर हो जाए।

सन्तों ने जो कविताएं या शब्द लिखे होते हैं ये उनके अपने अनुभव होते हैं। उनके शब्द गुरु प्यार को दर्शाते हैं। सन्त किसी किताब का लिखा हुआ नहीं कहते। जब हजरत बाहु ने गुरु का अंदरूनी प्रकाश से भरा हुआ स्वरूप देखा तो यही कहाः

एह तन मेरा चश्मां होवे, मुर्शिद वेख न रज्जां हू।
लूं लूं दे मुढ लक्ख लक्ख चश्मां, हिक्क खोला हिक्क कज्जां हू।
इतनयां डिठयां सबर न आवे, होर किते वल भज्जां हू।
मुर्शिद दा दीदार है बाहू, लक्ख करोड़ां हज्जा हू।

मेरा पूरा शरीर आँख बन जाए जिससे मैं अपने गुरु के स्वरूप को निहार सकूँ। मेरी एक आँख बंद हो जाए तो दूसरी खुल जाए अगर गुरु को निहारने के बाद भी मुझे शान्ति नहीं मिलेगी तो मैं गुरु के दर्शनों का कोई और तरीका ढूंढूंगा। गुरु का दर्शन मक्का मदीना के हज करने से ऊपर है।

आज भी हिन्दुस्तान में लोग रस्म-रिवाज और व्रत आदि करने में विश्वास करते हैं। आज से तीन चार सौ साल पहले जब गुरु साहिबान इस दुनियां में नहीं आए थे तब लोग सूर्य और चन्द्रमा के नाम पर व्रत रखते थे जबकि उन्हें यह नहीं मालूम था कि सूर्य और चन्द्रमा कितनी दूर हैं? गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''सूर्य और चन्द्रमा की पूजा करने वालों को कुछ नहीं मिलता अगर वे लोग अंदर जाकर गुरु स्वरूप को देख लें तो उनका आना-जाना खत्म हो जाएगा। जो अंदर जाते हैं जिन्हें गुरु के दर्शन होते हैं उनका इस दुनियां में आना-जाना खत्म हो जाता है।''

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जिन लोगों पर भक्ति का रंग चढ़ गया है वे आराम से नहीं बैठ सकते। जिन्होंने गुरु को अंदर देखा होता है वे गुरु से दूर नहीं होते।'' आप कहते हैं:

उडके गुरु नूं मिलिऐ, जे खम्ब विकदे होण बजारी।
खम्ब विकंदड़े जे लहां, घिना सामी तोल।

कई राजा-महाराजा इस दुनियां को छोड़कर चले गए, लोग उनसे डरते थे और उनकी इज्ज़त करते थे। कई बार ऐसा होता है उनका राज्य समाप्त हो जाता है तो लोग न उनकी इज्ज़त करते हैं

और न ही उनसे डरते हैं ऐसे राजा-महाराजाओं के मरने के बाद उन्हें कौन याद रखता है? सन्त हृदय पर राज्य करते हैं। जो पीढ़ियां हमारे बाद आएंगी वे भी गुरु के उस प्यार को नहीं भूल पाएंगी।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि गुरु परमात्मा है। गुरु के साथ रहने वालो को भी इज्ज़त मिलती है मौत का फरिश्ता उनकी तरफ देख भी नहीं सकता। गुरु हम पर दया करके हमें अपने जैसा सुंदर बनाते हैं, हमें खुशी और आनन्द देते हैं।

सूर्य सबको एक समान रोशनी और गर्मी देता है चाहे कोई हिन्दू, मुस्लमान, सिक्ख या ईसाई है। इससे कोई मतलब नहीं कि वह इस देश का है या किसी और देश का है। वह पापी है या अच्छा इंसान है सबको बराबर गर्मी और रोशनी मिलती है। इसी तरह सन्तों द्वारा परमात्मा की दया सबको बराबर मिलती है अगर कोई गुरु के पास आकर कहता है कि मैं पापी हूँ तो सन्त उससे कहते हैं, ''तुमने जो पहले किया वह माफ है लेकिन आगे से मत करना; अब अपने जीवन को बेहतर बनाना।''

अगर हम गुरु अर्जुनदेव जी के बारे में बातें करते जाएं कि उनके दिल में अपने गुरु के लिए कितना प्यार था चाहे हम सारा दिन सारी रात सारी ज़िंदगी बातें करते रहे वे खत्म नहीं होंगी। अगर हम अपने प्यारे परमात्मा सावन और कृपाल को परमेश्वर कहें तो गलत नहीं। हमें उन्हें सच्चा परमात्मा और बादशाहों का बादशाह कहने से हिचकिचाना नहीं चाहिए।

प्यारेयो! मैं आप लोगों से माफी चाहता हूँ। आज आपकी भजन गाने की बारी थी लेकिन मेरे दिल में यह सब था जिसे में बाहर लाना चाहता था। मैंने आपका सारा समय ले लिया है, कल हम भजन गाने का समय रखेंगे।

* * *

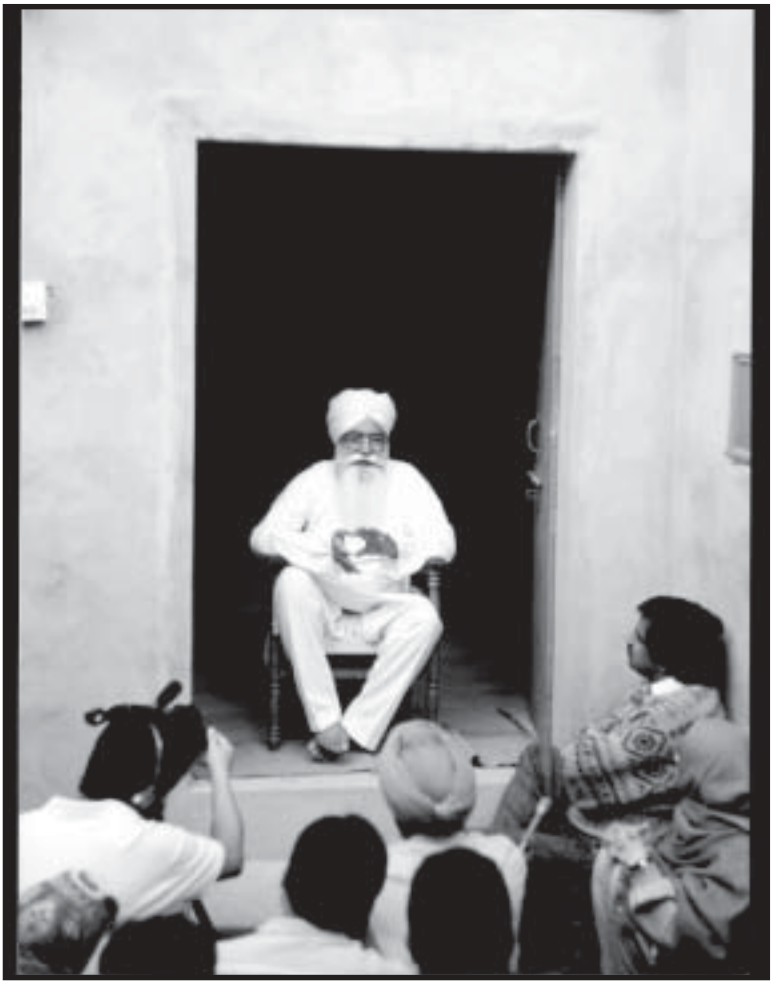

अमृत वेला

आपमें से बहुत से प्रेमियों ने पहले भी इस जगह के बहुत बार दर्शन किए हैं और ज्यादातर प्रेमी इस जगह के महत्त्व के बारे में जानते हैं कि यह जगह क्यों बनाई गई। इस जगह के बारे में मासिक पत्रिका में कई बार बहुत कुछ छप चुका है इसलिए मैं इस समय इस जगह के

बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा लेकिन इस जगह के बारे में मैं आपको एक जरूरी बात बताना चाहूँगा कि वह बहुत सुहावना समय था जब इस गरीब आत्मा के अंदर परमात्मा के लिए प्रेम पैदा हुआ। उसी प्यार के कारण प्यारे कृपाल आए और उन्होंने इस गरीब आत्मा की प्यास को बुझाया; क्योंकि परमात्मा कृपाल में आत्माओं को परमपिता परमात्मा से जोड़ने की ताकत थी।

जीवित गुरु का यह फायदा है कि वह आपकी आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ता है। वह आपके बर्तन के मुताबिक ही आपको देता है। देने वाला दुनियां में देने के लिए ही आया है; अब सवाल हमारे लेने का है कि हमारे अंदर लेने की कितनी इच्छा है।

मैं तो सदा यही कहा करता हूँ कि मेरे लिए वह समय बहुत सुहावना था जब इस आत्मा में परमात्मा की भक्ति की चाह पैदा हुई और परमात्मा कृपाल इस जगह मेरी आत्मा की प्यास बुझाने और मेरी चाहत को संतुष्ट करने के लिए आए।

मैंने कई बार बताया है कि मेरे दुनियावी माता-पिता बहुत अमीर थे। परमात्मा ने उन्हें सभी सुख-सुविधाएं दी हुई थी लेकिन बचपन से ही मुझे दुनियावी दौलत में कोई दिलचस्पी नहीं थी और मैं हमेशा दुनियावी चीज़ों को नर्क से कम नहीं समझता था। मेरे अंदर किसी पूर्ण को मिलने की इच्छा थी।

मेरा जन्म एक सिक्ख परिवार मे हुआ था। मैं गुरु नानकदेव जी की बानी पढ़ता था। मैं जब गुरु और शिष्यों की कहानियाँ पढ़ता तो मेरे दिल में इच्छा उठती कि मैं भी गुरु नानक जैसे किसी गुरु से मिलूँ! कई बार मुझे उन शिष्यों की किस्मत पर हैरानी होती कि वे कितनी किस्मत वाले थे जिन्हें गुरु नानक जैसे गुरु के साथ बैठने का मौका मिला।

मैं चाहता था कि मेरी जिंदगी में भी ऐसा दिन आए जब मैं भी किसी पूर्ण गुरु के चरणों मे बैठ सकूँ। मैंने सारा जीवन परमात्मा के आगे प्रार्थना की, मैं बहुत रोया लेकिन जब सही समय आया तब मेरी प्रार्थना को सुना गया और मुझे जवाब दिया गया।

परमात्मा कृपाल खुद मेरे पास आए और उन्होंने इस गरीब आत्मा की प्यास को बुझाया। परमात्मा कृपाल ने इस पवित्र जगह पर अपने पवित्र पैर रखे। परमात्मा कृपाल के कहे अनुसार ही इस जगह को किसी को दिखाने के लिए नहीं खोला जाता। आपने मुझसे कहा था, ''जो प्रेमी यहाँ रहकर दस दिन तक भजन-अभ्यास करें उन्हें ही इस जगह के दर्शन करवाए जाए।''

महाराज कृपाल सिंह जी के गाँव के घर के जिस कमरे में महाराज सावन सिंह जी रूके थे उस कमरे की पवित्रता को बनाए रखने के लिए उस कमरे को कुछ खास समय के लिए ही दर्शनों के लिए खोला जाता था। आपने मुझे भी ऐसा ही करने का हुक्म दिया इसलिए चाहे कोई मेरा कितना भी प्यारा हो जब तक वह यहाँ रहकर दस दिन तक भजन-अभ्यास नहीं करता मैं उसे इस जगह के दर्शनों की इज़ाज़त नहीं देता क्योंकि यह मेरे गुरु का हुक्म है।

मैं आशा करता हूँ कि आपने इस जगह से प्ररेणा लेनी है कि किस तरह एक आत्मा इस जगह मन के साथ संघर्ष करके कामयाब होकर परमात्मा को हासिल कर सकी। आप जानते हैं भजन-अभ्यास करना मन के साथ संघर्ष करना है। जो अपने मन के साथ संघर्ष करते हैं उन्हें गुरु की दया प्राप्त होती है।

* * *

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सिमरन

एक प्रेमी: *मैं किस तरह कंठ की बजाय तीसरे तिल पर ध्यान लगाकर सिमरन कर सकता हूँ?*

बाबा जी: जब आपके अंदर विचार आते हैं उस समय आप **सिमरन** को बढ़ाने की कोशिश करें। आप जब भी कुछ सोचते हैं तो आपका ध्यान तीसरे तिल पर होता है कंठ की तरफ नहीं होता क्योंकि तीसरे तिल पर मन और आत्मा की गाँठ होती है। जब हम कुछ याद करने की कोशिश करते हैं तो हमारा ध्यान तीसरे तिल पर ही जाता है उसी तरह आप सिमरन को तीसरे तिल पर टिकाने की कोशिश करें।

शुरू में आपको तीसरे तिल पर ध्यान लाने में मुश्किल हो सकती है अगर आप 'शब्द-नाम' को बार-बार दोहराएंगे और सारा दिन **सिमरन** करते रहेंगे तो आपका ध्यान अपने आप ही तीसरे तिल पर आ जाएगा। तीसरे तिल के साथ हमारा बहुत गहरा संबन्ध है क्योंकि यहाँ आत्मा की बैठक होती है और मन भी यहीं होता है। हम जब भी कुछ सोचते हैं तो हमारा ध्यान तीसरे तिल पर ही जाता है इसलिए जरूरी है कि हम तीसरे तिल पर ध्यान लगाकर सिमरन करें।

ज्यादातर सतसंगी जब भजन पर बैठते हैं तभी पाँच पवित्र नामों को जपना शुरू करते हैं, बाकी समय वे **सिमरन** नहीं करते। उन्हें सिमरन याद ही नहीं रहता, वे सिमरन की बजाय दुनियावी धंधो के बारे में सोचते रहते हैं इसलिए दुनियां के विचार उन पर हावी रहते हैं। अगर हम हर समय **सिमरन** करने की आदत बना लें तो हम आसानी से दुनियावी ख्यालों को रोक सकते हैं फिर दुनियावी ख्यालों की बजाय हमारा सिमरन दिन भर चलता रहेगा।

एक प्रेमी : *मैं भजन के दौरान अपना सारा ध्यान तीसरे तिल पर लगा देता हूँ और मेरा सारा ध्यान सिमरन पर होता है फिर भी कभी मेरा ध्यान मन की तरफ चला जाता है?*

बाबा जी : आपको अपने ध्यान को तीसरे तिल पर टिकाकर लगातार सिमरन करना चाहिए।

एक प्रेमी : *मैंने कई बार घर पर और यहाँ भी देखा है कि अगर मैं सुबह उठकर फिर सो जाता हूँ तो मुझे स्वपन आते हैं और कामवासना वाले बुरे विचार आते हैं, क्या एक बार उठकर फिर नहीं सोना चाहिए?*

बाबा जी : जब आप एक बार भजन के लिए उठ जाते हैं तो फिर आपको सोना नहीं चाहिए। यह सच है कि जब सुबह के भजन के बाद आप सो जाते हैं तो आपको निश्चय ही बुरे ख्याल या बुरे सपने आते हैं। जब आप भजन पर बैठते हैं तो सिमरन कर रहे होते हैं और चारपाई पर लेटते ही सिमरन करना बंद कर देते हैं तो जो दुनियावी ख्याल आप पहले सोच रहे होते हैं उनको आपके ऊपर काबू पाने का मौका मिल जाता है।

इसलिए सारा दिन **सिमरन** करने की हिदायत दी जाती है अगर आप सारा दिन सिमरन करेंगे और भजन के बाद सो भी जाएंगे तो आपका सिमरन चालू रहेगा और आपको बुरे ख्याल नहीं आएंगे। अगर हम लगातार सिमरन की आदत बना लें तो हमारी हालत ऐसी हो जाएगी जैसा कि कबीर साहब कहते हैं, ''चाहे मैं जागूँ या सोऊँ सदा परमात्मा के चरणों में रहता हूँ।''

अगर आप इस तरह के सिमरन की आदत बना लें तो आपको ऐसी परेशानी नहीं होगी फिर चाहे आप भजन करने के बाद सो भी जाएं तो भी आपकी आत्मा शरीर में नहीं आती क्योंकि आप तीसरे तिल पर **सिमरन** कर रहे होते हैं और आत्मा तीसरे तिल पर रहती है। अगर हमारी लगातार सिमरन करने की आदत नहीं बनी है तो

जब हम सो जाते हैं तो हमारी आत्मा इन्द्रियों में चली जाती है इस तरह हमारे जो पहले ख्याल होते हैं उनका असर स्वपनों और बुरे ख्यालों के रूप में होता है।

***एक प्रेमी** : जब आप मुझ पर दृष्टि डालते हैं तो मैं बहुत खुश होता हूँ । कभी-कभी आप बहुत ज्यादा देर तक दृष्टि डालते हैं तो मुझे आश्चर्य होता है?*

बाबा जी : हुजूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''रूहानियत आँखों के द्वारा ली और दी जाती है; इसे हम अपनी ग्रहण शक्ति के अनुसार ही प्राप्त करते हैं।''

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''**सन्तों की आँखों से अमृत बहता है। जब गुरु शिष्य के ऊपर दृष्टि डाल रहा होता है तो गुरु शिष्य की आत्मा की सफाई कर रहा होता है।**''

अगर हम पवित्र हैं, लगातार **सिमरन** करके खूब अभ्यास करते हैं तो हम सन्तों की दृष्टि की कीमत देख सकेंगे। सतगुरु हमें अपनी आँखों से जो दे रहा होता है वह सब कुछ हमारी सफाई में ही लग जाता है अगर हम पवित्र हैं तो हम सतगुरु के दर्शनों की कीमत को आसानी से जान सकते हैं। शिष्य की मुक्ति के लिए सतगुरु की एक दृष्टि ही काफी है।

हजरत बाहू कहते हैं, ''जब सतगुरु दया भरी दृष्टि से देखता है तो लाखों आत्माओं को तार देता है लेकिन लाखों ज्ञानियों की दृष्टि एक आदमी पर पड़े तो वह कुछ नहीं कर सकती।'' जिनकी आत्मा पवित्र होती है वही दर्शन की कीमत जानते हैं। गुरु अर्जुनदेव कहते हैंः

सज्जन मुख अनूप, आठों पहर निहालसा।
फिरदा कित्थे हाल, जे डिट्ठा तां मन धरापया।।

स्वामी जी महाराज सतगुरु के स्वरूप की प्रशसा करते हुए कहते हैंः

मेरे गुरु का कोई स्वरुप देखे हो जाए हूर परंदरी।।

अगर कोई मेरे सतगुरु के सुंदर स्वरूप के दर्शन कर ले तो वह दुनियां के सुंदर चेहरों के दर्शन नहीं करना चाहेगा।

अगर हम सतगुरु के अंतरी स्वरूप के दर्शन कर लें तो हमें उस जैसा कोई सुंदर स्वरूप नहीं दिखेगा। भाई नंदलाल गुरु गोविंद सिंह जी के भक्त थे। आप अपने गुरु के आगे विनती करते हुए कहते हैं:

तेरी इक नज़र है मेरी ज़िंदगी का सवाल है।

***एक प्रेमी** : हम भजन के समय किस तरह बैठें, भजन पर बैठे हुए दर्द होता है क्या यह भजन का एक हिस्सा है?*

बाबा जी : चाहे आप किसी भी तरह बैठें लेकिन जब आपने बैठकर भजन करना शुरू कर दिया तो आपको हिलना नहीं चाहिए। आप इस तरह बैठें कि आप लंबे समय तक बिना हिले-डुले बैठ सकें। अगर आप भजन के बीच में बैठने का तरीका बदलेंगे तो आपको फिर से भजन शुरू करना पड़ेगा जोकि ठीक नहीं।

दर्द को सहन करने की कोशिश करें अगर आप दर्द को सहन नहीं कर सकेंगे और शरीर को हिलाएंगे तो आपकी आत्मा जो शरीर से ऊपर की ओर सिमटना शुरू होती है वह फिर वापिस नीचे शरीर में चली जाएगी और आपको फिर से अभ्यास शुरू करना पड़ेगा। बिना हिले-डुले बैठने की कोशिश करें।

बहुत से सवाल जो यहाँ पूछे गए हैं ये सवाल पहले भी कई बार पूछे गए हैं और इनमें से बहुत से सवाल मासिक पत्रिका में छप चुके हैं। इसलिए मैं आपसे विनती करूंगा कि आपको मासिक पत्रिका पढ़नी चाहिए ताकि आपको बार-बार सवाल न पूछने पड़ें। आप जब सतसंग में बैठते हैं तो सतसंग को ध्यान से सुनें तो आपको पता लगेगा कि आपके सारे सवालों के जवाब सतसंग में दिए जाते हैं।

* * *

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से अहमदाबाद में 6,7 व 8 जुलाई 2012 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,
फुटबाल ग्राउंड के सामने,
(कांकरिया झील के पास)
अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

16 पी. एस. आश्रम में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से 3,4 व 5 अगस्त 2012 को 16 पी. एस. आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। आप सब प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

सन्तबानी आश्रम,
गाँव व डाकखाना - 16 पी. एस.,
तहसील - रायसिंह नगर - 335 039
जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)